

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 8: नामकरण तथा बाल-लीलाएँ

14 September 2026



गोशाला की गोपनीयता में ऋषि गर्ग नन्द के दोनों बालकों का नामकरण संस्कार करते हैं, यशोदा के श्यामवर्ण शिशु के अनेक नाम तथा गूढ़ महिमा प्रकट करते हुए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में शिशु कृष्ण ने छकड़ा उलटा, बवण्डर-राक्षस तृणावर्त का उद्धार किया, और अपनी माता को अपने मुख में ब्रह्माण्ड की पहली झलक दिखाई। यह अष्टम अध्याय संकट से मोड़कर माधुर्य की ओर ले चलता है। यदुओं के कुल-पुरोहित विद्वान् ऋषि गर्ग चुपचाप व्रज आते हैं और बलराम तथा कृष्ण का नामकरण संस्कार करते हैं, बालक के अनेक नाम तथा गूढ़ महिमा को अनावृत करते हुए। फिर श्रीशुकदेव दोनों बालकों की कोमल लीलाओं का चित्रण करते हैं — कीचड़ में घुटनों के बल चलना, राहगीरों के पीछे जाना, व्रज के घरों से माखन और दही चुराना — यहाँ तक कि गोपियाँ हँसती हुई यशोदा के पास उलाहना लेकर आती हैं। और अन्ततः, जब बालक पर मिट्टी खाने का आरोप लगता है और वे माता को दिखाने के लिए अपना मुख खोलते हैं, तब यशोदा उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देखती हैं, और एक काँपते हुए क्षण के लिए समझ जाती हैं कि उनका पुत्र वास्तव में कौन है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 8 (अष्टम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: नामकरण संस्कार तथा बाल-लीलाएँ
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: व्रज में गोकुल नामक गोप-ग्राम
- केन्द्रीय विषय: गर्ग द्वारा बलराम और कृष्ण का गुप्त नामकरण; दोनों बालकों की घुटनों-चलने तथा बाल-लीलाएँ; गोपियों का माखन-चोरी का उलाहना; तथा मिट्टी खाने के आरोप पर शिशु के मुख में यशोदा का ब्रह्माण्ड-दर्शन
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 1-52
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

सप्तम अध्याय में राजा परीक्षित ने श्रीशुकदेव से भगवान् की और बाल-लीलाएँ सुनने की याचना की, और सुना कि कैसे शिशु कृष्ण ने अपने चरण से भारी छकड़े को उलट दिया, कैसे राक्षस तृणावर्त उन्हें बवण्डर के रूप में आकाश में उड़ा ले गया पर स्वयं मर गिरा जबकि शिशु अक्षत लौट आया, और कैसे यशोदा ने अपने पुत्र के जँभाई लेते मुख में ब्रह्माण्ड देखा। यह अध्याय उन्हीं शैशव-वर्षों को आगे बढ़ाता है, ऋषि गर्ग के व्रज आगमन से आरम्भ होकर।

गर्ग का आगमन तथा गुप्त नामकरण

वसुदेव के अनुरोध पर यदुओं के कुल-पुरोहित तथा महान् तपस्वी गर्ग चुपचाप नन्द के व्रज आए। अत्यन्त आनन्दित होकर नन्द जुड़े हाथों से उठकर उनका स्वागत करते हुए, उन्हें स्वयं भगवान् विष्णु के समान मानकर उनका पूजन किया, और सत्कार अर्पित करके पूछा कि वे उनकी क्या सेवा कर सकते हैं। किन्तु गर्ग ने सावधान किया कि यदि वे, यदुओं के सुविख्यात पुरोहित, खुले रूप में बालकों का संस्कार करें, तो शंकालु कंस यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि यही देवकी का आठवाँ शिशु है और उसका अहित करना चाहे। अतः नन्द ने अनुरोध किया कि नामकरण गोशाला के भीतर गुप्त रूप से, अपने ही लोगों से अनजान, किया जाए। सम्मत होकर गर्ग ने रोहिणी और यशोदा के दोनों पुत्रों का नामकरण चुपचाप सम्पन्न किया।



वसुदेव के अनुरोध पर ऋषि गर्ग व्रज आते हैं, और नन्द जुड़े हाथों से उनका स्वागत करते हैं ताकि वे गुप्त नामकरण संस्कार करें (श्लोक 1-11)।

श्रीगर्ग उवाच

अयं हि रोहिणीपुत्रो रमयन् सुहृदो गुणैः ।

आख्यास्यते राम इति बलाधिक्याद्बलं विदुः ।

यदूनामपृथग्भावात् सङ्कर्षणमुशन्त्यपि ॥ १२ ॥

*śrī-garga uvāca ayaṁ hi rohiṇī-putro ramayan suhṛdo guṇaiḥ ākhyāsyate rāma iti balādhikyād
balaṁ viduḥ yadūnām apṛthag-bhāvāt saṅkarṣaṇam uśanty api*

अर्थ: गर्ग ने कहा: रोहिणी का यह पुत्र, अपने गुणों से अपने प्रियजनों को आनन्दित करता हुआ, राम कहलाएगा; अपने अधिक बल के कारण लोग इसे बल जानेंगे; और यदुओं में भेद न रखने के कारण इसे संकर्षण भी कहेंगे। (स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 12)

यशोदा के पुत्र के विषय में गर्ग ने और प्रकट किया। प्रत्येक युग में यह शिशु एक रूप और एक वर्ण धारण करता है — बीते युगों में श्वेत, रक्त और पीत, और अब सुन्दर श्यामवर्ण। एक बार यह वसुदेव के घर जन्मा था, अतः ज्ञानीजन इसे वासुदेव कहेंगे। ऋषि ने कहा कि इसके नाम और रूप असंख्य हैं, जो इसके गुणों और कर्मों के अनुरूप हैं। यह बालक समस्त गोकुल का आनन्द तथा नन्द के घर का सौभाग्य होगा; इसके द्वारा वे प्रत्येक कठिनाई पार करेंगे, और जो इससे प्रेम करेंगे उन्हें उनके शत्रु कभी परास्त न कर सकेंगे, क्योंकि यह अपने गुणों और महिमा में साक्षात् भगवान् नारायण के समान है। नन्द को उपदेश देकर गर्ग अपने धाम लौट गए, और नन्द ने स्वयं को अपार आशीर्वाद से भरा हुआ अनुभव किया।

दोनों बालकों को घुटनों-चलने को लीलाएँ

कुछ ही समय बाद बलराम और कृष्ण गोकुल में घुटनों और हाथों के बल चलने लगे। ब्रज के कीचड़ में अपने नन्हे चरण घसीटते हुए, उनकी कमर और पैरों की करधनी-नूपुर की मधुर झंकार से स्वयं आनन्दित होते हुए, वे किसी राहगीर के पीछे थोड़ी दूर जाते और फिर, अपरिचित को पहचानकर, निर्दोष भय से माताओं के पास लौट आते। रोहिणी और यशोदा, स्नेह से ही अपने स्तनों में दूध भर आने पर, अपने कीचड़-सने पुत्रों को गोद में उठा लेतीं और दूध पिलातीं, स्तन-पान करते नन्हे-नन्हे दाँतों और मनोहर मुस्कानों को देखकर आनन्दमग्न हो जातीं।



बलराम और कृष्ण ब्रज के कीचड़ में घुटनों के बल चलते हैं, कमर की घंटियाँ बजती हैं, माताएँ रोहिणी और यशोदा आनन्दित होती हैं (श्लोक 21-24)।

जैसे-जैसे बालक कुछ बड़े हुए, वे बछड़ों के साथ खेलते, उनकी पूँछ पकड़कर घिसटते, और ब्रज की स्त्रियाँ अपना गृह-कार्य छोड़कर उन्हें देखने के आनन्द में हँस पड़तीं। बालक इतने चंचल थे और सींगवाले पशुओं, अग्नि, जल तथा काँटों की ओर इतने आकर्षित कि माताएँ उन्हें हानि से बचाने या अपने कर्तव्य निभाने में कठिनाई अनुभव करतीं, और उनका मन एक मधुर व्याकुलता से भर जाता।

ब्रज का माखन-चोर

समय के साथ कृष्ण, बलराम के साथ, अपनी ही आयु के गोप-बालकों के साथ खेलने लगे, और उनकी शरारतों का माधुर्य गोपियों को दल बाँधकर यशोदा के द्वार तक खींच लाया। वे उलाहना देने आतीं — यद्यपि उनके मुख यह प्रकट कर देते कि वे उससे कितना प्रेम करती हैं। वे कहतीं: यह दूध दुहने से पहले ही हमारे बछड़े खोल देता है; हमारा दही-दूध चुराकर बन्दरों को बाँट देता है; जब खाने को कुछ न बचे तो क्रोध में मटके फोड़ देता है और शिशुओं को रुला देता है, और फिर तुम्हारे पास आकर एकदम निर्दोष-सा बैठ जाता है।



गोपियाँ हँसती हुई यशोदा के पास कृष्ण की चतुर माखन-चोरी का उलाहना लेकर आती हैं, यद्यपि उनके हृदय उन्हीं पर मुग्ध हैं (श्लोक 28-31)।

हस्ताग्राह्ये रचयति विधिं पीठकोलूखलाद्यै-

श्छिद्रं ह्यन्तर्निहितवयुनः शिष्यभाण्डेषु तद्वित् ।

ध्वान्तागारे धृतमणिगणं स्वाङ्गमर्थप्रदीपं

काले गोप्यो यर्हि गृहकृत्येषु सुव्यग्रचित्ताः ॥ ३० ॥

hastāgrāhye racayati vidhiṁ pīṭhakolūkhalādyaiś chidraṁ hy antar-nihita-vayunaḥ śikya-bhāṇḍeṣu tad-vit dhvāntāgāre dhṛta-maṇi-gaṇaṁ svāṅgam artha-pradīpaṁ kāle gopyo yarhi gṛha-kṛtyeṣu suvyagra-cittāḥ

अर्थ: जब मटके ऊँचाई पर हाथ से बाहर टँगे हों, तब वह चौकी और ओखली आदि जमाकर उन तक पहुँचता है; उनमें क्या है यह भली-भाँति जानते हुए टँगे मटकों में छेद कर देता है; और अँधेरी कोठरी में अपने मणि-जटित शरीर को ही दीपक बनाकर माखन ढूँढ़ लेता है — यह सब उस समय जब गोपियाँ अपने गृह-कार्यों में पूर्णतः तल्लीन रहती हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 30)

यह सब विस्तार से सुनकर, और कृष्ण को बड़ी-बड़ी भयभीत आँखों से तथा ऐसे मनोहर मुख से अपनी ओर ताकते देखकर जिसे डाँटा ही न जा सके, यशोदा उन्हें झिड़क न सकीं और केवल हँसते मुख से खड़ी रह गईं।

यशोदा का पुत्र के मुख में ब्रह्माण्ड-दर्शन

एक दिन, खेलते समय, बलराम आदि गोप-बालकों ने यशोदा से कहा कि कृष्ण ने मिट्टी खाई है। अपने पुत्र का हाथ पकड़कर और कोमलता से डाँटते हुए — क्योंकि वे केवल उसका हित चाहती थीं — यशोदा ने पूछा कि उसने छिपकर मिट्टी क्यों खाई, जैसा कि उसके संगी और यहाँ तक कि बड़े भाई भी कहते हैं। “मैंने मिट्टी नहीं खाई, माँ,” भगवान् ने उत्तर दिया। “ये सब झूठ बोलते हैं। यदि तुम्हें इन पर विश्वास हो तो स्वयं मेरे

मुख में देख लो।” “तो फिर मुख खोलो,” उन्होंने कहा। और भगवान् श्रीहरि ने, जिन्होंने लीला में मनुष्य-शिशु का रूप धारण किया था, अपना मुख खोल दिया।



जब कृष्ण अपना मुख खोलते हैं, यशोदा उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देखती हैं — पृथ्वी, सागर, तारे, और स्वयं व्रज तथा अपने को भी (श्लोक 37-39)।

सा तत्र ददृशे विश्वं जगत्स्थासु च खं दिशः ।
 साद्रिद्वीपाब्धिभूगोलं सवाय्वग्नीन्दुतारकम् ॥ ३७ ॥
 ज्योतिश्चक्रं जलं तेजो नभस्वान्वियदेव च ।
 वैकारिकाणीन्द्रियाणि मनो मात्रा गुणास्त्रयः ॥ ३८ ॥
 एतद् विचित्रं सहजीवकाल-
 स्वभावकर्माशयलिङ्गभेदम् ।
 सूनुस्तनौ वीक्ष्य विदारितास्ये
 व्रजं सहात्मानमवाप शङ्काम् ॥ ३९ ॥



*sā tatra dadṛśe viśvaṁ jagat sthāsnū ca khaṁ diśaḥ sādri-dvīpābhi-bhūgolaṁ sa-vāyva-agnīndu-
 tārakam jyotiś-cakraṁ jalaṁ tejo nabhasvān viyad eva ca vaikārikāṇīndriyāṇi mano mātṛā
 guṇās trayaḥ etad vicitraṁ saha-jīva-kāla- svabhāva-karmāśaya-liṅga-bhedam sūnos tanau
 vīkṣya vidārītāsye vrajaṁ sahātmānam avāpa śaṅkāṁ*

अर्थ: उसके मुख में उन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड देखा — चराचर जगत्, आकाश और दिशाएँ, पर्वतों, द्वीपों और सागरों सहित पृथ्वी, वायु, अग्नि, चन्द्र और तारे, ज्योति-चक्र, जल, तेज और आकाश, इन्द्रियाँ और मन, विषय तथा तीनों गुण। अपने पुत्र के छोटे-से शरीर और खुले मुख में जीव, काल, स्वभाव, कर्म — इस समस्त विविधता से युक्त इस अद्भुत ब्रह्माण्ड को, और उसमें व्रज तथा स्वयं अपने को भी देखकर, यशोदा विस्मय से भर उठी। (स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 37-39)

क्या यह स्वप्न है, उन्होंने सोचा, या भगवान् की माया, या मेरे मन का ही कोई भ्रम — अथवा मेरे इस अद्भुत शिशु की ही महिमा? अपने हृदय में उस अग्राह्य सत्य को प्रणाम करते हुए, जो समस्त का आधार है, उन्होंने एक क्षण के लिए उस दिव्य माया को पहचान लिया जिससे वे स्वयं को नन्द की पत्नी और उनके ऐश्वर्य की स्वामिनी, इस शिशु को अपना पुत्र, तथा गोप-गोपियों और गौओं को अपना मानती थीं।

अहं ममासौ पतिरेष मे सुतो
ब्रजेश्वरस्याखिलवित्तपा सती ।
गोप्यश्च गोपाः सहगोधनाश्च मे
यन्माययेत्थं कुमतिः स मे गतिः ॥ ४२ ॥

aham mamāsau patir eṣa me suto vrajeśvarasyākhila-vittapā satī gopyaś ca gopāḥ saha-godhanāś ca me yan-māyayettham kumatih sa me gatih

अर्थ: “जिसकी माया से मैं ऐसा मानती हूँ कि ‘मैं ब्रजेश्वर के समस्त ऐश्वर्य की पतिव्रता स्वामिनी हूँ; यह मेरे पति हैं, यह मेरा पुत्र; गोप-गोपियाँ तथा गौएँ मेरी हैं’ — वही भगवान् मेरी एकमात्र गति हैं।” (स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 42)

तब सर्वशक्तिमान् भगवान् ने, अपनी माता की इस अनुभूति को देखकर, उन पर पुनः वात्सल्य-रूप अपनी दिव्य माया डाल दी। वह दर्शन क्षण भर में विलीन हो गया; यशोदा ने अपने पुत्र को गोद में खींच लिया, उनका हृदय पहले की भाँति स्नेह से भर उठा, और उन्होंने उन भगवान् को — जिनकी महिमा वेद, उपनिषद् तथा ज्ञान की महान् परम्पराएँ सदा गाती हैं — पुनः केवल अपने प्रिय पुत्र के रूप में देखा।

ब्रज के सौभाग्य पर परीक्षित का विस्मय

यह सुनकर राजा परीक्षित के मन में वह प्रश्न उठा जो प्रत्येक भक्त के हृदय में रहता है।

श्रीराजोवाच
नन्दः किमकरोद् ब्रह्मन्श्रेय एवं महोदयम् ।
यशोदा च महाभागा पपौ यस्याः स्तनं हरिः ॥ ४६ ॥

śrī-rājovāca nandaḥ kim akarod brahman śreya evaṁ mahodayam yaśodā ca mahā-bhāgā papau yasyāḥ stanam hariḥ

अर्थ: राजा ने कहा: हे ऋषे, नन्द ने ऐसा कौन-सा पुण्य-कर्म किया जिससे उन्हें इतना महान् सौभाग्य मिला, और उस परम भाग्यशालिनी यशोदा ने क्या किया, जिनका स्तन साक्षात् भगवान् श्रीहरि ने पान किया? (स्कन्ध 10, अध्याय 8, श्लोक 46)

उन्होंने विस्मय से कहा कि वसुदेव और देवकी तक इन मनोहर बाल-लीलाओं के दर्शन को न पा सके, जिन्हें ऋषि आज भी गाते हैं और जो संसार के पापों को धो देती हैं। इस प्रेममय प्रश्न के साथ श्रीशुकदेव नन्द और यशोदा के गहन सौभाग्य को प्रकट करने की तैयारी करते हैं — एक ऐसा सौभाग्य जो, जैसा अध्याय के अन्तिम श्लोक बताते हैं, बहुत पहले परम भगवान् को अपने पुत्र-रूप में पाने का वरदान पाए महान् आत्माओं से जन्मा।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् के अनन्त नाम हैं, सब एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं। गर्ग प्रकट करते हैं कि इस शिशु के, उसके गुणों और कर्मों के अनुरूप, असंख्य नाम और रूप हैं (श्लोक 12)। प्रत्येक पावन नाम उसी अनन्त भगवान् का द्वार है।
2. भगवान् अन्तरंगता में छिपना पसन्द करते हैं। परम पुरुष कीचड़ में घुटनों से चलते हैं, माखन चुराते हैं, और किसी भी शिशु की भाँति खेलते हैं (श्लोक 21-31)। उनकी महिमा इसीलिए ढँकी रहती है कि विस्मय नहीं, अपितु प्रेम उनके निकट आ सके।
3. भगवान् की शरारत भी उनकी कृपा है। गोपियों के उलाहने आधे-हँसी में हैं; कृष्ण की “चोरी” समस्त ब्रज को उनसे स्नेह में बाँध देती है। भगवान् माखन से पहले हृदय चुराते हैं।
4. सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भगवान् में स्थित है। यशोदा के दर्शन में सृष्टि, ब्रज और स्वयं यशोदा शिशु के मुख में दिखते हैं (श्लोक 37-39)। वे संसार में नहीं हैं; संसार उनमें है।
5. दिव्य प्रेम दिव्य कृपा से टिका रहता है। जब यशोदा सत्य की झलक पाती है, तब भगवान् स्वयं उनका वात्सल्य लौटा देते हैं (श्लोक 42-43), यह सिखाते हुए कि शुद्ध भक्ति हमारी उपलब्धि नहीं, अपितु उनका वरदान है।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय में एक गहन कोमलता है। यशोदा को उनके शिशु में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दिखाया जाता है — और फिर, कृपापूर्वक, उसे भुला भी दिया जाता है, ताकि वे उसे अपने नन्हे बालक के रूप में प्रेम करती रहें। भागवत मानो हमसे कहता है कि भगवान् हमें अपनी महानता से अभिभूत नहीं करना चाहते; वे प्रेम पाना चाहते हैं। दर्शन सत्य है, पर प्रेम भी सत्य है, और वे प्रेम को ही सुरक्षित रखना चुनते हैं। हममें से जो भगवान् को जानने के लिए तरसते हैं, उनके लिए यह एक मौन सुधार है: लक्ष्य केवल अनन्त को समझ लेना नहीं है, जिसे यशोदा भी क्षण भर से अधिक धारण न कर सकीं, अपितु उस एक को प्रेम करना है जो अनन्त को धारण किए है, और स्वयं को उनके द्वारा प्रेम किए जाने देना है। जो माखन-चोर हमारे मटकों में छेद करता है, वह वास्तव में माखन से कहीं अधिक प्रिय वस्तु — हमारा हृदय — चुराने का ही यत्न कर रहा है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज भगवान् को उनके अनेक नामों में से किसी एक से पुकारें, जैसे गर्ग ने प्रकट किया कि एक ही भगवान् असंख्य नामों से पुकारे जाते हैं। कृष्ण का कोई एक नाम चुनें जो आपको प्रिय हो — राम, गोविन्द, दामोदर, वासुदेव — और उसे दिन भर कोमलता से दोहराएँ, प्रत्येक उच्चारण को अपने को उनके थोड़ा और निकट ले जाने दें। आरम्भ करते समय जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का अष्टम अध्याय अनन्तता की दो झलकों के बीच पिरोई माधुर्य की एक माला है। गर्ग बालक के गूढ़ नाम और महिमा को अनावृत करते हैं; दोनों बालक घुटनों से चलते, खेलते और माखन चुराते हुए समस्त ब्रज के हृदय में बस जाते हैं; और जब यशोदा अपने पुत्र का मुख खोलती हैं तो उसमें सम्पूर्ण सृष्टि पाती हैं, स्वयं अपने सहित। फिर भी अध्याय विस्मय में नहीं, अपितु प्रेम में समाप्त होता है — भगवान्

कोमलता से अपनी माता को उनके स्नेहमय भ्रम में लौटा देते हैं ताकि लीलाएँ चलती रहें। परीक्षित का यह अन्तिम प्रश्न, कि नन्द और यशोदा ने इतना महान् सौभाग्य पाने के लिए क्या किया, हमें भी उसी लालसा में आमन्त्रित करता है: कि हम भी, चाहे कितनी ही विनम्रता से, ब्रज के लाल से प्रेम करने वालों में गिने जाएँ। उनके नामों और लीलाओं को सुनकर हमारे भी हृदय गोकुल के माखन-चोर द्वारा चुपचाप चुरा लिए जाएँ।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य ज्ञान-ज्योति हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

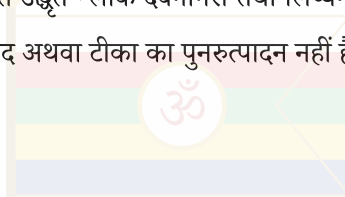
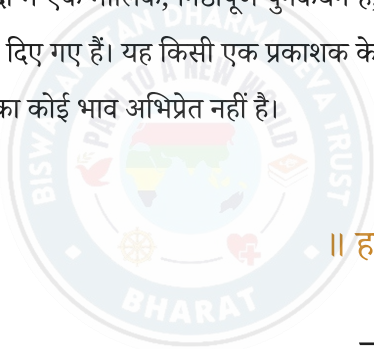
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), अष्टम प्रवचन।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसरण में प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा संबद्धता अथवा समर्थन का कोई भाव अभिप्रेत नहीं है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-8-naming-ceremony-and-infant-pastimes-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट